श्रृंगार-तिलक

कविकुलगुरु कालिदास क
संस्कृत रचनाश्रित



रचयिता

श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'

रामदेव झा

श्रृंगार-तिलक

卐

[कविकुलगुरु कालिदासक संस्कृतरचनाश्रित]

श्रीसुरेन्द्र झा 'सुमन'

प्रकाशक
मैथिली - मंदिर
दरभङ्गा

द्वितीय संस्करण
(१९६६)
मूल्य .२५

मुद्रक
श्री भूपेन्द्र झा
मिथिला प्रेस, दरभंगा

बिन्दुमात्र

कविकुल-तिलक कालिदास क 'शृङ्गार-तिलक' संस्कृत रस-साहित्य क लघुतम काव्य थिक। संख्या मे उन्नैस रहितहुँ शृङ्गार व्याख्या मे ई बीसे पड़ैछ। बिन्दी-तिलक सूक्ष्मतम रहितहुँ जेना मुखक प्रसाधन रहैछ तहिना इहो रस-तिलक शृङ्गार साहित्य मे मुख्य स्थान रखैछ।

प्रस्तुत मैथिलीकरण मूल संस्कृतोक लघु रूप थिक। वसन्ततिलक-शार्दूलविक्रीडित सन मध्य-बृहत् छन्दहु क भाव-वस्तु केँ दोहा क लघुता मे अँटायब ओ ओकर प्रवाह क निर्वाह कहाँ धरि संभव भेल, से बिज्ञ वाचक जानथि।

विद्वद्वर सुहृद्वर श्री रमानाथ बाबू एकर सरुचि आस्वादन कयलन्हि, तेँ ओही महानुभाव केँ ई लघु रसबिन्दु ससंकोचहि अर्पित कयल।

मिथिलामिहिर कार्यालय, दरभंगा
(प्रथम संस्करण, १९४८)

—'सुमन'

कत सुरभारति कविगुरु क
छन्द सिन्धु गंभीर !
कत लघु दोहा बिन्दु ई
मैथिली क पद नीर !!

❀

तदपि सुमन अर्पित सुचित
ग्रहण करथु रुचिमान ।
साहित्य क कुसुमाकर
'रमानाथ' मतिमान ॥

मैथिली

शृंगार-तिलक

— १ —

भुज मृणाल, मुख कमल, चख
मीन, केश शैवाल ।
कुच चकवा, लावण्य-सर
मदन-दग्ध हित बाल ॥

— २ —

पहु नहि, मधु निशि, विरह जरि
पुनर्जन्म जौं लेब ।
पिक क व्याध भै, राहु बनि
विधु कें छोड़ैब कुलैब ॥

— ३ —

अधर पल्लव क, पंकज क
मुख, कुन्द क दुति दंत ।
अङ्ग चम्पक क, अहँक धनि !
उर पुनि बज्र क हंत !!

— ४ —

एकहु खंजन कंज — गत
भूपति — पद चढ़बैछ ।
अहँक मुख-कमल थित युगल
मदन — गर्त खसबैछ ॥

— ५ —

जाउ नुकाउ घरहि, गहन—
समय, न अहँ बहराउ ।
इन्दुमुखी ! तजि मलिन विधु
ग्रसत विमल मुख राहु ॥

— ६ —

मृगमद — ललित कपोल, उर
कुंकुम, अधरहु लाल ।
नयनक अंजन अछत, की
पहु रूसल वा बाल ?

— ७ —

पहुक प्रवास — कथँ बितल
राति, शेष किछु काल ।
मान मोल हो तावतहिँ
प्राची सौतिनि लाल ॥

— ८ —

चक्र भ्रमण, आतप तपन,
अनल दहन दुख — शेष ।
कलश युवति-भुजमूल लहि
सुख न होए बिनु क्लेश ॥

–९–

जाहि रंगनि क संग शठ!
अनुभव राति क रीति।
जाह ततय, अलि प्रकृति धिक
नव–नव फूल क प्रीति॥

–१०–

पति व्यवसाय–प्रवास मे,
सासु ननदिहि क गाम।
एकसरि युवती, उचित की
राति वास एहि ठाम?

–११–

राति अन्हरिआ, घन सघन
चोर क भय भरि गाम।
पति सूतल, ऊठह पथिक!
भय अधीर हम वाम॥

–१२–

गृह त्रिदोष–औषधि युवति
हरति सकल दुख मेलि।
पित्त अधर रस, वात कुच–
मर्दन, कफ रति–केलि॥

–१३–

आहत कुटिल कटाक्ष सँ
तदपि उपाय न आन।
विषहि विष क औषधि सुनल
सुन्दरि! वचन प्रमान॥

–१४–

मदन-अनल-ज्वाला शमन
नहि चन्दन उर लेप।
आबा आगि बढ़य अधिक
पाँक क पाबि प्रलेप॥

–१५–

नयन क शोभा सँ विजित
मृग लेलक वन – वास ।
कुचयुग-जित गज नगर-बिच
मूढ़ न बुझ उपहास ॥

–१६–

कामिनी क कुच बीच अति
अद्भुत अग्नि बरैछ ।
दग्ध करय दूरस्थ केँ
लग्न क ताप हरैछ ॥

–१७–

फूल क उद्भव फूल सँ
कतहु सुनल नहि कान ।
देखल धनि - मुख - कमल मे
नयन नलिन छविमान ॥

–१८–

भेल अराजकता एतय
की डकैतहि क छूटि ?
जे कामिनि चललहुँ अहाँ
विवश हमर चित लूटि !

–१९–

भामिनि ! यदि अहँ कुपित, पुनि
कहब कथा शत बेरि ।
चुंबन आलिङ्गन हमर
थीक उचित दी फेरि ॥



❀

रस श्रृङ्गार क प्रान चान वा मदन वसंते ।
रचलन्हि धनिक शरीर प्रजापति नव रसवंते ।।
धारि कमंडलु रटथि वेद अंतर नहि विषय रुचि ।
सृष्टि व्यस्त धाता पुरान कथमपि न सकथि रचि ।

(कालिदासीय विक्रमोर्वशीय)

रामदेव झा

सुमन-प्रकाशन

कतिपय प्रकाशित काव्य-रचना

१	अर्चना	१.२५	१४	अन्योक्तिका	१.००
२	प्रतिपदा	२.००	१५	मुक्तावली	१.५०
३	साओन-भादव	१.२५	१६	प्रकीर्ण शतक	१.००
४	पयस्विनी	३.००	१७	श्रृङ्गारहार	१.००
५	अङ्कावली	१.५०	१८	भारतवन्दना	०.५०
६	अनुगीताञ्जलि	२.००	१९	शिवमहिमा	०.५०
७	सनेस	०.५०	२०	आनन्द लहरी	०.३५
८	श्रृङ्गार तिलक	०.२५	२१	ललना लहरी	०.५०
९	चण्डी चर्या	०.५०	२२	शक्ति-स्तवक	०.७५
१०	ऋतुश्रृङ्गार	१.२५	२३	हरि-स्मरणिका	०.३५
११	'पुत्रोऽहं पृथिव्याः'	०.७५	२४	कवि-नवतिका	१.२५
१२	कथा-यूथिका	१.२५	२५	हितोपदेशिका	०.५०
१३	प्रकृति-शतक	१.००	२६	जतरा चारूधाम	१.००

अग्रिम काव्य - प्रकाशन

१	दत्तवती	(महाकाव्य)
२	कृष्णावतरण	"
३	सञ्जीविनी	(खण्डकाव्य)
४	उत्तरा	"
५	गीतिका	(गीतिकाव्य)
६	अन्तर्नाद	(राष्ट्रिय परोक्षता)

मैथिली मन्दिर : राजकुमारगंज, दरभंगा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha, Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra,

Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was often felt that books in Maithili are not widely available despite huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu Keshi Mishra, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Mahamahopadhyaya Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy, dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society that was a huge loss for Mithila.

But the organization was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195
8877213104
vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥

 ॥ विज्ञापन ॥ 

❀मिथिलारिसर्चसोसाइटी❀

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहिं सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय. एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो: तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो। (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्ल्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय। एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि। ओ दरभङ्गाक कलैक्टर साहेबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि। बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासद्गणमें नूँ छथि।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि।

५ उक्त विषय सम्बन्ध में जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा।